21. दादी जी के महावाक्य

आज बाबा ने कहा, तुम बच्चों की एकमत होनी चाहिए क्योंकि यहाँ के एकमत के संस्कार आधा कल्प तक चलने हैं। एक श्रीमत के संस्कार जो अभी हम भर रहे हैं इन्हीं संस्कारों के आधार पर 21 जन्म तक कोई की भी मत व राय लेने की दरकार नहीं रहती। तो हम सब एक श्रीमत पर चलने वाले हैं। हमारी एक श्रीमत 21 पीढ़ी तक चलनी है। यह हमारा फाउण्डेशन है।

एक है कार्य–व्यवहार में एकमत रहना और दूसरा है स्वस्थिति में। कई बार कार्य–व्यवहार में ही भिन्न–भिन्न मतें तो हो जाती हैं, फिर स्थिति बिगड़ती है। तो पहले अपने से पूछना है कि पहली सब्जेक्ट क्या है? स्वस्थिति वा सेवा? कार्य में अगर स्वस्थिति खत्म हो जाती है तो क्या उसमें सफलता मिलेगी?

बाबा कहते, तुम्हारे में अगर योग का जौहर नहीं है तो तीर नहीं लग सकता। तो जब हम सेवा करने जाते हैं उस समय अगर हमारी स्वस्थिति नहीं तो हम सेवा क्या करेंगे! उसमें शक्ति क्या मिलेगी! जब हम सबकी पहले एकमत होगी तो एक के शुद्ध वायब्रेशन का सहयोग मिलेगा। एक–एक की शक्ति मिलकर 11 हो जायेगी। अगर हम पहले ही आपस में डिस्टर्ब हो गये, फिर सेवा करने निकले तो उसकी सफलता क्या?

इसलिए कभी भी अपने मन को खराब न करो। अगर मन खराब हुआ तो पार्टीबाजी होगी, दुश्मनी बनेगी, डिस्ट्रक्टिव काम होगा। इसमें नम्रता गुण चाहिए।

जब भी कोई ऐसी बात हो तो सरेण्डर हो जाओ अर्थात् मोल्ड हो जाओ। एक ने कही, दूसरे ने मानी, उसका नाम है ज्ञानी। इसलिए अगर हम एक–दो की बात मानकर चलेंगे तो मानना अर्थात् मोल्ड होना, हाँ जी करना। अगर राय है तो प्रेम से, शांति से सुनायी जाये। सुनाने में हर्जा नहीं लेकिन मालिक बनकर सुनाओ, फिर बालक बन जाओ। मोल्ड की शक्ति ज़रूर हो।

ओम् शांति।